हिन्दी दिवस – 2000 अंक 7

अनियतकालीन साहित्य पत्रिका-लघुकथा विशेषांक (एक)

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच
ज्ञानोदय अकादमी, हरिद्वार
की
एक प्रस्तुति

सम्पर्क सूत्र: – 158 नया हरिद्वार कालोनी, हरिद्वार

मां गंगा की कृपा के साथ अपने महान राष्ट्र को सादर समर्पित

हरिद्वार के एक साहित्यकार का परिचय

नाम : दिनेश शर्मा 'दिनेश'

पिता का नाम : स्व० श्री शिव कुमार शर्मा

माता का नाम : स्व० श्रीमती चन्द्रवती शर्मा

जन्म तिथि : २७ जुलाई सन् १६४६

जन्म स्थान : जनपद मेरठ

शिक्षा : एम०ए० (अर्थशास्त्र)- औद्योगिक प्रशिक्षण (विद्युत)

समप्रति : बी०एच०ई०एल० हरिद्वार गुणता नियंत्रण विभाग में कार्यरत

आत्मकथ्य : संवेदनशील प्रकृति स्वभावगत है- बरबस ही मन जीवन की घटना दुर्घटनाओं से जुड़ जाता है और स्वान्तः सुखायः भावनाओं में शब्दों का सामंजस्य स्वतः ऐसा क्रम ले लेता है कि गीत संरचना हो जाती है; जिसे माँ का आशिर्वाद ही कह सकता हूँ।

उपलब्धियां :

१. बी०एच०ई०एल० हरिद्वार (हिन्दी विभाग) द्वारा प्रकाशित हिन्दी स्मारिकाओं (उद्योग भारती, सुरभि, मंदाकिनी, नंदिनी, जाह्नवी, शौर्य, विजय, स्वर आदि) में रचनाएँ प्रकाशित।

२. बी०एच०ई०एल० हरिद्वार में समय-समय पर आयोजित विभिन्न काव्य प्रतियोगिताओं में रचनाएं पुरस्कृत।

३. स्थानीय एवं बाह्य विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा समय-समय पर प्रकाशित पत्रिकाओं एवं पुस्तकों में रचनाएं प्रकाशित।

४. 'पारिजात' हिन्दी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच, बी०एच०ई०एल० हरिद्वार द्वारा प्रकाशित पत्रकों एवं दो संकलनों (काव्य मंजरी वर्ष १६६१ एवं काव्य मकरन्द वर्ष १६६६) में रचनाएं प्रकाशित।

५. गाजियाबाद से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'काल-प्रहरी' में रचना प्रकाशित।

६. आकाशवाणी नज़ीबाबाद से रचनाओं का प्रसारण।

७. विभिन्न कवि सम्मेलनों/ मुशायरों में सहभागिता।

८. 'पारिजात' हिन्दी सा० एवं साँ० मंच, हरिद्वार का पूर्व कोषाध्यक्ष एवं वर्तमान में सह-सचिव।

६. 'पारिजात' मंच द्वारा प्रकाशित काव्य मकरन्द-१६६६ के सम्पादन में सहयोग

१०. कविता, गीत, गज़ल, मुक्तक, दोहे आदि के अतिरिक्त गद्य गीत लेखन विधा में हैं।

११. काव्य रचना के अतिरिक्त कहानी, निबन्ध, लेख, लघुकथा आदि लेखन में भी पर्याप्त रुचि।

१२. 'दीपशिखा' साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच ज्ञानोदय अकादमी हरिद्वार के विशिष्ट सदस्य

-के० एल० दिवान

ज्योति

हिन्दी दिवस : 2000 अंक – 7

अनियतकालीन साहित्यिक पत्रिका

लघुकथा विशेषांक (एक) सितम्बर-2000

संपादक

के0 एल0 दिवान

संपादकीय सहयोग

डा. नरेश मोहन, होशियार सिंह चौहान एडवोकेट

आजीवन सदस्य
- हरिराम कुमार (हरिद्वार)
- देवेन्द्र अष्ठाना (देहरादून)
- जितेन्द्र शर्मा (मंसूरी)
- डा0 शिवचरण विद्यालंकार (हरिद्वार)
- श्रीमती संतोष रंगन (हरिद्वार)

वार्षिक सदस्य
- माणिक घोषाल
- शैलेन्द्र सक्सेना
- राम कुमार भामा
- बृजेन्द्र हर्ष
- दिनेश शर्मा 'दिनेश'
- अर्जुन सिंह बिष्ट
- जगदीश शेषी
- जितेश कुमार सहगल

सम्पर्क–सूत्र :– 158 नया हरिद्वार कालोनी, हरिद्वार

फोन : 427960

एक अंक की सहयोग राशि ३० रूपया
वार्षिक ४ अंकों की सहयोग राशि १०० रूपया।
आजीवन सदस्यता ५००/- रुपया
साहित्य सेवा सहयोग ....

-: अनुक्रमणिका :-

आज की लघु कथा

कोई उनका भी है

एक देश की बात कर रहा हूँ, वहाँ पर जनतन्त्र था। जनतन्त्र की स्थापना के समय कहा गया था कि यहाँ जनता की सरकार जनता द्वारा जनता के लिए होगी; पर धीरे धीरे सारे सपने टूट गये और सरकार बनकर रह गई लुटेरों की सरकार लुटेरों द्वारा लुटेरों के लिए। कानून ऐसे बना दिये गए कि लोग उनका पालन बिल्कुल ही नहीं कर पाते थे। सरकारी अधिकारी सरे आम कहते या तो हमसे मिलकर चलो या कानून का पालन करो। यदि दोनों बातें नहीं कर सकते तो परिणाम भुगतने के लिए तैयार हो जाओ। जो विरोध करते, उनके बिजली, पानी के कनेक्शन काट दिये जाते। मकान गिरा दिये जाते। झूठे मुकदमे बना कर फांसा जाता। पागल घोषित कर दिया जाता और वह पागल खाने में रहकर सचमुच पागल बन जाते। किसी के बीबी बच्चों को अगवा कर लिया जाता। लाखों रुपयों की फिरोती मांगी जाती। न मिल पाने पर कत्तल कर दिया जाता। परिणाम यह हुआ कि आजाद देश के वासी होने पर भी लोगों के मुँह पर ताले लग गए।

उसी देश में एक तस्कर था। हाथी दांत की तस्करी के लिए उसने एक हजार से भी अधिक हाथी मरवा डाले थे। कई सौ करोड़ रुपये की चन्दन की लकड़ी की तस्करी की थी। वह जंगल का राजा पुकारा जाता था। कई राज्यों के बड़े बड़े नेता और सरकारी कर्मचारी उसके इशारों पर नाचते थे। केन्द्र सरकार में भी उसकी अच्छी खासी घुसपेठ थी। इसीलिए कई वर्षों तक लगातार जुर्म करने पर भी वह पकड़ा नहीं गया था। कई बार उसको पकड़ने की दिखावटी कोशिश की जाती। वह तो न पकड़ा जाता पर हर बार कुछ पुलिस वाले और कुछ निर्दोष लोग जरुर मार डाले जाते।

एक बार उसने दो राज्यों के मुख्य मंत्रियो को बताया कि अब वह कुछ परिवर्तन चाहता था। जंगल छोड़कर किसी बड़े शहर में रहना चाहता था। तब तय हुआ वह एक प्रसिद्ध और लोकप्रिय हीरो को अगवा करेगा फिर अपनी शर्तें रखेगा जो सब की सब मान ली जाएंगी। और तब अपनी इच्छा के अनुसार किसी बड़े शहर में रहकर अपने मन के अनुसार कार्य करता रहेगा। योजनानुसार हीरो अगवा कर लिया गया। योजनानुसार ही दोनों राज्यों में खरीदे हुए लोगों द्वारा हीरो को छुड़ाने के लिए आवाजें उठाई गईं। जलूस निकाले गए। स्कूल कालेज बन्द करवाये गए। बाजार बन्द करवाए गए। सरकारी दफ्तरों में तोड़ फोड़ की। बसों में आग लगाई गई। कुछ लोगों ने आत्मदाह की बात कही। इस बीच तस्कर ने अपनी शर्तों को दोनों सरकारों के सामाने रखा।

सैकड़ों करोड़ रुपये नकद मांगे। रहने के लिए महल मांगा। सभी मुकदमे वापस लेने की बात कही। और वादा मांगा कि आगे भी कोई मुकदमा नहीं चलाया जाएगा। साथ ही उसने मांग की कि जेलों में बन्द उस के सभी साथियों को बिना शर्त के छोड़ दिया जाय। दोनों सरकारों ने आज्ञाकारी गुलामों की तरह उस तस्कर की सभी मांगें मान लीं और सबको छोड़ने की व्यवस्था की जाने लगी। सारे देश में बेचैनी की एक लहर सी दौड़ गई। दोनों सरकारों के ऐसे निकम्मेपन और बेशर्मी से भरे कदम की कल्पना भी नहीं की थी। लोगों को लगने लगा इस मिसाल को आधार मानकर सारे देश की जेलों में बन्द सभी कैदी अपनी अपनी रिहाई की मांग करने लगेंगे। और तब उनको देश का कौन सा कानून बन्दी बनाकर रख सकेगा। परिणाम होगा सबकी माफी। सब का छूट जाना और भविष्य में कैसे और क्यो किसी को पकड़ा जा सकेगा। पुलिस की छुटटी। वकीलों की छुटटी। अदालतों की छुट्टी। देश में जंगल राज।

पर तभी किसी ने सुपरिम कोर्ट में सरकारी फैसले के खिलाफ अपील कर दी और सुपरिम कोर्ट ने तस्कर और उसके साथियों की रिहाई पर रोक लगा दी। तब लोगों ने राहत की सांस ली और उनको लगा कोई उनका भी है।

-के० एल० दिवान

एक सन्देश

हम सुधरेंगे - जग सुधरेगा

महंगाई, भ्रष्टाचार, जातिवाद, आतंकवाद व अन्य सभी सामाजिक बुराइयों के जिम्मेदार हम सब भारतवासी ही हैं।

हम सदैव ध्यान रखें :

1. हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई बाद में हैं पहले, भारतवासी हैं।
2. भारतवर्ष हमारा है, हम मिलजुलकर ही इसे आगे ले जा सकते हैं।

कृपया :

1. भारतवासियों को एकजुट कीजिए, शिक्षित कीजिए और एक दूसरे की जान माल व धर्म स्थलों की सुरक्षा कीजिए। स्वाभिमानी बनिये। संकल्प लीजिये कि हमें भारतवर्ष को उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर ले जाना है।
2. किसी के वोट बैंक मत बनिये।
3. जीवन के किसी भी चुनाव में शिक्षित, योग्य एवं सेवाभावी प्रत्याशी को ही चुनकर भेजें।
4. देश और समाज के दुश्मनों से हम सब भारतवासी एकजुट होकर निपटें।
5. हर चुनाव में एकजुट होकर वोट दें।

याचक : विजय कुमार अग्रवाल
मै० प्रकाश कोल्ड स्टोरेज, बदायूँ (उ०प्र०)

जनहित में 'दीपशिखा' साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच हरिद्वार द्वारा प्रकाशित

ममत्व

कमल चोपड़ा

अम्मा की हालत थी कि बिगड़ती जा रही थी। उल्टी में थोड़ा खून भी आया देखकर दीनू घबरा सा गया था। घर में अकेला था वह। साहब और मालकिन बच्चों समेत पूरे सात दिन के लिये कुल्लू मनाली घूमने गये हुए थे। अम्मा को उसके सहारे घर पर ही छोड़ गये थे। कुछ तो अम्मा पहले ही से बीमार रहती थी। आज सुबह से कुछ ज्यादा ही चक्कर आ रहे थे। थोड़ा उठकर चली ही थी कि गिरकर बेहोश ही हो गई। कुछ देर बाद होश तो आ गया था पर चक्कर और उल्टियाँ आने लगी थीं।

कुछ समझ नहीं आ रहा था दीनू को क्या करे क्या नहीं – "कुछ ऊँच–नीच हो गई तो मैं बिना कसूर बेमौत मारा जाऊँगा। हूँ तो बहुत पुराना। मालिक विश्वास भी करते हैं मुझ पर, तभी तो घर और अम्मा को मेरे भरोसे छोड़ गये पर....... आखिर हूँ तो नौकर ही। कुछ हो गया तो मुझ पर ही शक करेंगे सभी....... क्या करूँ। मुझे मालिक को फौरन इत्तला कर देनी चाहिये। मैंने तो तीन बार कहा था मालिक से कि जाते वक्त मुझे जिस होटल में ठहरेंगे उसका फोन नम्बर देकर जाना। अम्मा जी की तबीयत ठीक नहीं रहती। वैसे भी पीछे कोई बात हो जाये तो आपको खबर तो कर दूँ....... पर जाने क्यों टाल गये और जाते वक्त नम्बर देकर ही नहीं गये। सब समझता हूँ मैं, ताकि उनकी मौज मस्ती में ख़लल ना पड़े। कह भी रहे थे कि यहाँ के झंझटों से छुटकारा पाने के लिये तो जा रहे हैं। वहाँ भी यही टैंशन लेंगे तो जाने का फायदा ही क्या? पर मैं क्या करूँ? बल्कि उन्हें तो खुद ही नम्बर देकर जाना चाहिए था कि पीछे बीमार माँ को अकेला छोड़कर जा रहे हैं। उन्हें खुद ही चिन्ता होनी चाहिए थी। या खुद ही फोन करके हालचाल पूछ लेते. ...... पर क्यों पूछें? उन्हें क्या? कोई बच्चा बीमार हो तो कोई माँ इस तरह से छोड़कर घूमने जा सकती है? ऐसा हो ही नहीं सकता।"

डाक्टर को बुलवाकर अम्मा को दवाई वगैरह दिलवाकर दीनू कमरे से बाहर जाने लगा तो अम्मा ने पूछा– "कहाँ जा रहा है रे तू?"

–"बाबू जी के दफ्तर फोन करके पता करता हूँ, शायद वहाँ किसी को अपनी ठहरने का कुछ नम्बर–वम्बर दे गये हों। कम से कम बाबूजी को खबर तो कर दूँ......।"

– "नहीं रे .... ये गलती मत करना। बिल्कुल भी जरूरत नहीं है उन्हें खबर करने की। तू उन्हें खबर कर देगा तो बेचारों के घूमने–घामने का सारा मज़ा जाता रहेगा। फ़ौरन लौट आयेंगे वो। नहीं भी लौटे, तो ध्यान इधर ही लगा रहेगा। उनका सारा मज़ा ही किरकिरा हो जायेगा। अभी ज़िन्दा हूँ....... कुछ नहीं हुआ मुझे। खामखाह उन्हें परेशान क्यों करे?"

१६००/११४ त्रिनगर, दिल्ली-११००३५

मुक्ति

चाँद शर्मा

दो दिन से उस संतप्त विक्षिप्त झोंपड़ी में चूल्हा नहीं जला था। अपनी बीवी और बच्चों की नश्तर–सी प्रश्न सूचक निगाहों का सामना करना उसके लिए मुश्किल था। काम की तलाश में जुट गया था वह।

आज बड़ी मुश्किल से काम मिला था। अनाज के बोरों से भरे ट्रक से अपनी पीठ पर बोरे उठा–उठा कर सेठ के गोदाम में रखता जा रहा था। भूख से बेहाल था– पीठ दर्द से दोहरी हुई जा रही थी।

टांगों में कंपन थी– पर वह अधिक से अधिक बोरे उठा कर गोदाम में रख देना चाहता था क्योंकि एक रुपया प्रति बोरे के हिसाब से उसे मज़दूरी जो मिलनी थी।

दिल में एक उम्मीद थी कि आज घर में चूल्हा जलेगा और वह अपने परिवार के साथ पेट–भर रोटी खाएगा। बढ़िया शराब के नशे में धुत मोटी तोंद वाला भैंसे–सा हट्टा–कट्टा सेठ आराम कुर्सी पर पसरा हुआ अधखुली आँखों से काम होता देख रहा था, पर भूखा पेट, बोझ से दोहरी हुई पीठ और कांपती आँखें कब तक काम कर सकते थे।

अबकी बार वह औंधे मुँह गिर पड़ा....... बोरे के ऊपर ही और उसके प्राण पखेरू उड़ गए।

सेठ का स्वर उभरा– 'जी लगा कर काम कर, रे काम चोर ! यह क्या सिजदा कर रहा है?'

पर वह तो मुक्त हो चुका था भूख, चूल्हे, रोटी की चिन्ताओं से और सेठ की आवाजो से।

पुरियामाला, बटाला, गुरदासपुर

रूठे बादल

रामशंकर चंचल

चेहरे पर झुर्रियां, पीठ और पेट दोनों मिलकर एक हो रहे थे। गाल पिचके हुए, आँखें धंसी-धंसी खामोश प्रतीक्षारत आसमान को निहार रही थीं। कितने ही दिनों से प्रतिदिन सुबह-शाम वह घंटों आसमान को निहारता रहता, शायद कोई बादल आए और बरस जाए, लेकिन हर रोज़ निराश हो अगले दिन की बात सोच कर सोने का प्रयास करता रहता। नींद तो कई दिनों से गायब थी। पत्नी देवकी, तीन बच्चे, दो बैल और गाय का प्रतिदिन का भोजन कहां से लाए? पिछले वर्ष का अनाज और घास भी खत्म होने को आ गया था। बड़ा लड़का और बहू दाड़की (मजदूरी) करने बड़ौदा चले गए थे। राहत कार्य बन्द हो तो बड़ौदा और कोटा ही इनके लिए वे स्थान है जहां वे काम कर अपना पेट भर सकते हैं। बड़ा लड़का जब भी आता, थोड़े पैसे दे जाता था, लेकिन उससे क्या होता। कई दिनों से उसने और देवकी ने पेट भर खाना भी नहीं खाया। बच्चों को जरूर मिल जाता था, लेकिन आज वह भी एक समस्या बन गई थी।

आखिर एक दिन बादल के दीवाने पांगला की खामोश, मुर्झाई आँखें चमक उठीं। बादल घिरे और खूब बरसे। मारे खुशी के पागल-सा वह अपने साहूकार के पास गया। गाय को गिरवी रखकर बोने के लिए कुछ अनाज ले आया। अब उसके सूखे खेतों में हरियाली थी। बीज अंकुरित हो गये थे। वो अपने डागले पर बैठ शाम को मस्ती से बांसुरी बजाता, लेकिन ये खुशी चार दिन की थी, क्योंकि उसके बाद न कभी पांगला ने बादल देखे, न कभी बरसे। जिन बीजों ने पौध का रूप लिया था वे भी मुरझाने लगे। पौधों की तरह पांगला भी मुरझाने लगा था। उसकी चमकीली आँखें फिर उदास व चिन्ता में डूब गई। सभी दैवी-देवताओं को मना लिया, लेकिन ईश्वर भी निष्ठुर हो गया था।

आखिर देखते-देखते पानी के अभाव में पौधे मुरझाकर सूख गए थे। इधर पांगला और देवकी भी शारीरिक तौर पर दिनों-दिन जीर्ण होते जा रहे थे।

शेष था तो सिर्फ चार खम्भों पर टिकी झोपड़ी, मिट्टी के बर्तन, टूटी खटिया; लेकिन भयंकर आंधी–तूफ़ान के साथ जो वर्षा हुई तो सब कुछ नष्ट हो गया। अगर कुछ था तो सिर्फ पांगला, देवकी और बच्चों के अर्द्धनग्न पत्थर की तरह खामोश शरीर।

रामशंकर चंचल, १४५, गोपाल कालोनी, झाबुआ म.प्र.-४५७६६१

बटवारा

डा0 राकेश अग्रवाल

"अम्मा ! हमारे आंगन में यह दीवार क्यों खड़ी हो रही है? इससे तो हमारा आंगन छोटा हो जायेगा। हमें खेलने की भी जगह नहीं बचेगी।" छोटे से अखिल की बातें सुन कर उसकी माँ सुनीता ने उसे समझाते हुए कहा कि हम में और ताऊजी में बंटवारा हो रहा है। अखिल उस समय बंटवारे का अर्थ पूरी तरह भले ही न समझा हो, पर आंगन में खिचती दीवार को देखकर एक बार वह उदास जरूर हुआ और अपने छोटे भाई निखिल को गोदी में लेकर बाहर चला गया।

बीस वर्ष पंख लगाकर उड़ गये। अखिल और निखिल दोनों की शादी हो गयी। आज उनके भी आंगन में दीवार खिंच रही थी, दोनों के बेटे खिंचती दीवार को विस्मय से देख रहे थे।

"हम कहाँ खेलेंगे?" इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं था। बंटवारा अपनी गति से चल रहा था।

''हिमदीप'' राधापुरी हापुड़-२४५ १०१ (उ०प्र०)

एकता के रंग

डा0 कमलेश रानी अग्रवाल

बच्चों की टोली ने गली से बाहर मोर्चा जमा रखा था। तरह–तरह के रंग बाल्टियों में घोल रखे थे। क्या मजाल कि कोई उनकी पिचकारी के रंग से बचकर निकल जाये।

इतने में एक मुसलमान सज्जन उधर से निकले। बच्चों के हाथ

रूक गये। वे फुसफुसाने लगे–इन पर रंग मत डालना। मुसलमान हैं, देखते नहीं इनके मुल्ला जी वाली दाढ़ी है।

फिर भी एक छोटे बच्चे ने उन पर रंग डाल दिया। मुल्ला जी ने लपक कर उस बच्चे को गोद में उठा लिया। यह देखकर बच्चे सहम गये। पर उन्होंने बच्चों की ओर मुस्करा कर कहा–अरे भाई आप लोग भी हम पर रंग डालो, रूक कैसे गये? हम मुसलमान हैं तो क्या हुआ? पैदा तो इसी मिट्‌टी में हुए हैं। ईद भी हमारी है, होली भी हमारी है।

उनकी बात सुनकर बच्चे खुशी से झूम उठे। होली है, कहते हुए सभी बच्चों की पिचकारी से एक साथ रंग फूट पड़े। मुल्ला जी निश्चल प्यार के रंगो से सराबोर हो गये।

उन्होंने बच्चों के मन से हिन्दू–मुलसमान का भय निकाल दिया था। एकता के रंग गहरे हो गये।

अध्यक्षा महिला उपभोक्ता परिषद ''हिमदीप'' राधापुरी, हापुड़

स्वतंत्र या परतंत्र

रेनू सैनी

पन्द्रह अगस्त के दिन काफ़ी सारे लोग आकाश में पतंगें उड़ा रहे थे। किसी की पतंग छोटी थी तो किसी की बड़ी। आकाश में उस दिन काफ़ी तादाद में रंग–बिरंगी पतगें उड़ रही थीं जो दिखने में काफ़ी खूबसूरत लग रही थीं। अमीर व मध्यम वर्ग के लोग उस दिन पतंगों पर पतंगें खरीद रहे थे और पतंगों की दुकान वाले मालिकों की चाँदी हो रही थी। अचानक एक पतंग की दुकान से तीन बच्चे जो लगभग नौ–दस वर्ष के थे तथा दिखने में बहुत ही गरीब व कमज़ोर मालूम होते थे, बाहर निकल कर आए और आकाश में उड़ती हुई रंग–बिरंगी पतंगों की तरफ ताकने लगे। तभी उनमें से एक लड़का आकाश की तरफ ललचाई नज़रों से देखते हुए दूसरे लड़के से बोला– ''काश आज हमारे पास भी पैसे होते तो हम भी अपनी आज़ादी की खुशी इसी तरह पतंग उड़ाकर व्यक्त करते।'' इतने पर तीसरा बच्चा बोला, पैसे और पतंग तो दूर की बात है, अगर आज के दिन हमारा मालिक हमारे लिए छुट्टी ही

कर देता तो भी हमें लगता कि सचमुच हम आज के दिन आज़ाद हुए थे। तभी पतंग की दुकान के अन्दर से मालिक बाहर निकल कर आया और उन्हें बाहर देखकर गुस्से से आग बबूला हो उठा और बोला– "दुकान में अभी इतना सारा काम पड़ा है और तुम यहाँ पर गप्पें हाँक रहे हो। चलो चलकर पतंगें बनाओ।" बेचारे तीनों बच्चे अपने मालिक की डाँट से बुरी तरह सहम गए और चुपचाप अन्दर चले आए। दुकान के अन्दर पतंग बनाते–बनाते तीनों आह भरकर सोच रहे थे, "काश हमारे मालिक को हम पर दया आ जाए और वह हमें भी आज़ादी का आनन्द लेने दे। हमें तो मालूम ही नहीं आजादी की खुशी होती कैसी है? हम तो आज भी गुलाम हैं। आज से पचास वर्ष पूर्व देश अंग्रेजों का गुलाम था और आज देश के आज़ाद होने के पचास वर्ष बाद भी हम अपने ही भारतवासियों के गुलाम हैं।"

३, डी.डी.ए. फ्लैट्स, खिड़की गाँव, मालवीय नगर, नई दिल्ली-११००१७

उसके बाद

रोहताश फलसवाल

पुष्पा की शादी पिछले साल इन्हीं दिनों में हुई थी। एक साल के पूरा होते–होते आज़ का दिन उस के लिए जो लेकर आया है; उसे वह चुपचाप देख और समझने की कोशिश कर रही है।

वह सभी से अलग; ऊपर के कमरे में अकेली; एक कोने में खड़ी; आँसुओं की बूदों को एक–एक करके पोंछ रही थी।

आज़ उसके माँ–बाप, भाई–भाभी, सास–ससुर और देवर–जेठ इस बात का फैसला करने के लिए एक जगह इकट्ठे हुए थे कि पुष्पा के पति; जो देश की सीमा पर सुनसान और बर्फीली पहाड़ियों पर पड़ौसी देश के सैनिकों के साथ हुए संघर्ष में शहीद हो गया था। उस पर मिलने वाली धनराशि का सही और असली मालिक कौन होगा?

"हम एक बात बता देना चाहते हैं कि मरने वाला हमारा भाई था। और सबसे ज्यादा तकलीफ़ भाई के मरने पर भाई को होती है।" एक ने सभी के बीच में खड़े होकर कहा। यह व्यक्ति शहीद का भाई था।

"जिसका सुहाग चला गया; उसकी भी तो सोचो। सारा पैसा

पुष्पा को मिलना चाहिए। वह किसके सहारे जीवन गुज़ारेगी?" कमरे के कोने में बैठे–बैठे एक आदमी ने कहा। यह आदमी पुष्पा का भाई था।

"लेकिन इस बात की क्या गारण्टी है कि सारा पैसा लेने के बाद पुष्पा दूसरी शादी नहीं करेगी।" यह शहीद के बाप का स्वर था।

"शादी तो मैं उसकी जरूर करूंगा। पैसा चाहे मिले न मिले।" पुष्पा के पिता ने कहा। और फ़फ़क कर रो पड़ा।

और अन्त में.......।

एक बूढ़ा व्यक्ति लाठी का सहारा लेकर खड़ा हो गया। सभी खामोशी से उसके शब्दों का इन्तज़ार कर रहे थे। उस ने कहा, "यदि पुष्पा दूसरी शादी करना चाहती है; तो वह सारा पैसा छोड़ दे। और सारा पैसा चाहती है तो वह सारा जीवन विधवा रहने के लिए तैयार हो जाए। फैसला पुष्पा बेटी पर छोड़ दो।" यह गाँव का मुखिया कह रहा था।

पुष्पा सब सुन रही थी। वह जानती थी कि अब उस शहीद के बाद कोई उसके एवज़ में मिले धन का उपभोग करेगा। कोई उसकी शहादत के नाम पर वोट मांगेगा। वही एक है जो उस के बाद उसकी याद को हृदय में समेट कर रखेगी। और ये सब उस शहीद के नाते रिश्तेदार होने के कारण समाज़ में विशेष प्रतिष्ठा का दावा किया करेंगे।

रा० वरि० मा० बाल विद्यालय, उजवा, नई दिल्ली-११००७३

भोलाशंकर की मुस्कान

साधुराम दर्शक

उस दिन भोला शंकर जी के मन में न जाने क्या मौज आयी कि वे पार्वती से बोले, "चलो पार्वती भू–लोक की यात्रा कर आयें। बहुत अर्सा हो गया है ब्रह्मदेव द्वारा निर्मित सृष्टि को देखे हुए। याद करते ही 'नन्दी' आ उपस्थित हुआ। शिव और पार्वती उस पर आरूढ़ हो गये। 'नन्दी' ने उड़ान भरी और शिव पार्वती की इच्छानुसार अगले ही क्षण वह देव–भूमि भारत की राजधानी इन्द्रप्रस्थ की एक बस्ती के चौराहे पर था।

'नन्दी' से उतरकर शिव और पार्वती बस्ती की ओर चल दिए।

अभी वे कुछ दूर ही गये थे कि पार्वती ठिठक गयी और खुशी से बोली, "देखिए भोलानाथ जी, इस पटिका पर कितना अच्छा लिखा है, कितना सुन्दर! '....... साक्षर दिल्ली, स्वच्छ दिल्ली, सुन्दर दिल्ली!' इन लोगों ने तो पाण्डवों से भी सुन्दर बना दिया है दिल्ली को।"

भोला शंकर, जो कि जाणी–जाण हैं, कुछ नहीं बोले। चुपचाप चलते रहे। अभी चन्द कदम ही आगे चले थे कि पार्वती को बदबू से बचने के लिए नाक के आगे साड़ी का पल्लू रखना पड़ा। यह भयंकर बदबू कहां से आ रही है, यह जानने के लिए उसने इधर–उधर देखा। कोई पाँच गज़ दूर, तकरीबन सारी सड़क को घेरे हुए बहुत बड़ा गन्दगी का ढेर पड़ा था, उसी से भयंकर बदबू फूट रही थी। और चीथड़े पहने कुछ बच्चे और कुछ औरतें, कुछ गाएं, कुछ कुत्ते और कुछ सूअर उस पर चढ़े न जाने क्या ढूंढने के लिए उसे खंगाल रहे थे। पार्वती अवाक खड़ी देखती रहीं। यह जानकर उन्हें और परेशानी हो रही थी कि भोलाशंकर उसकी ओर शरारत से देखते हुए मन्द–मन्द मुस्करा रहे हैं। '.......साक्षर दिल्ली, स्वच्छ दिल्ली, सुन्दर दिल्ली ....।'

१६६-सन्देश विहार, दिल्ली-११००३४

आदमी और कौवा

त्रिभुवन एस. रमन

नयी सहस्त्राब्दि लग चुकी थी। ठण्ड और कोहरा इतना ज्यादा था कि कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। कारों के लम्बे–लम्बे काफ़िले गुज़रते जा रहे थे। पैदल स्कूटर वाले भी सर–सर भाग रहे थे। एक पल को लगा जैसे यह दुनिया सिर्फ भागने के लिए ही बनी हो। वहीं सड़क के किनारे एक वृद्ध की लाश पड़ी थी। शायद उसकी बूढ़ी हड्डियाँ और अधिक सर्दी नहीं बर्दाश्त कर सकीं थी। किसी के पास इतना वक्त नहीं था कि एक क्षण को रूक कर उस मानवी लाश को देख सके। इस आशा के साथ ही नहीं कि शायद वह उनमें से किसी का परिचित ही क्यों न हो।

वहीं थोड़ी दूर पर एक कौवा मृत पड़ा था। जिसके आसपास कुछ कौए काँव–काँव कर रहे थे और हम आदमियों को देखकर शायद नफ़रत भी कर रहे थे, मानों कह रहे हों कि क्या फ़ायदा इंसान बनने से। तुम

से तो हम बहुत अच्छे हैं। जब इंसानियत ही नही हो तो इंसान बनने से क्या फ़ायदा। मुझे कुछ समझ में नहीं आया और एक जगह बैठकर मैं भी लगभग यही सोचने लगा था। समय की रफ़्तार यथावत जारी थी।

दैनिक जागरण से एक लघुकथा

आदमी और कौवा

बलविन्द्र 'बालम'

शहर में एक अपरिचित लाश, सड़क से थोड़ी ही दूरी पर पड़ी थी। कोई आदमी रात के अंधेरे में किसी हादशे का शिकार हो गया लगता था। उसके जिस्म पर ठहरा हुआ खून, उसके साथ हुए हादशे की ठोस गवाही थी। जो व्यक्ति भी आता, देखकर चला जाता। कोई भी व्यक्ति उस लाश को सही स्थान पर पहुंचाने का साहस न करता। पढ़े–लिखे लोग भी इस लाश को देखकर चले जाते। कोई भी समीप न ठहरता। काफी देर के पश्चात पुलिस आई और लाश पर एक कपड़ा डाल दिया।

इसी दौरान एक कौवा बिजली के खंभे से टकरा कर गिर पड़ा तथा तड़प--तड़प कर मर गया। देखते ही देखते कौवे इकठ्ठे होते चले गए। जो भी कौवा देखता उस मृत कौवे के समीप आकर बैठ जाता करूण क्रंदन के साथ। देखते ही देखते अनगिनत कौवे इकठ्ठे हो गए और मृत कौवे को उठाकर ले गए।

ओंकार नगर गुरदासपुर (पंजाब)

इलाज

शैलेन्द्र सक्सेना 'दीपक'

"सुनीता ने आवेदन पत्र को एक बार पढ़ा और जब संतुष्ट हो गई तो अपने बॉस के केबिन की तरफ़ बढ़ गई।

अन्दर दाखिल होते ही उसने अपना आवेदन बॉस की तरफ बढ़ा दिया।

बॉस ने सुनीता को बैठने का इशारा करते हुए, उसके द्वारा दिये

गये कागज को पढ़ना शुरु कर दिया। बॉस जैसे–जैसे उस आवेदन को पढ़ते जा रहे थे, सुनीता हाँ और ना की कशमकश में पडी हुई थी।

" तुम्हें रुपये किस लिये चाहिए? " बॉस ने सिगरेट का लम्बा कश लेते हुए पूछा।

" सर मेरा छोटा भाई काफ़ी बीमार है। उसके इलाज के लिए ही मुझे एडवांस रुपये चाहिए। आप तो जानते ही हैं कि मेरे सिवा कोई और घर में नहीं है।" सुनीता अपनी परेशानी बॉस को बता रह थीं।

लेकिन बॉस के कान अपने दिल की धड़कनों को सुनने में व्यस्त थे, जो सुनीता की खूबसूरती देखकर बेकाबू हो रही थीं।

" सर! आपने क्या सोचा?" सुनीता ने बॉस की तन्मयता को तोड़ते हुए कहा।

" सुनीता आजकल कम्पनी की हालत ठीक नहीं चल रही है, मगर तुम्हारी परेशानी देखते हुए मैं तुम्हें एडवांस रुपये दे देता हूँ। आज ही ऑफिस के बाद तुम अपना चैक तैयार करवाकर ले जाना। लेकिन सुनीता पहले तुम्हें हमारा इलाज करना होगा।"

" इलाज ....?" सुनीता के गले में शब्द अटक कर रह गये।

" मैं समझी नहीं सर!"

"ऐसी नासमझ मत बनो सुनीता।" बॉस ने लगभग झुँझलाते हुए कहा। " अरे भई तुम्हारे भाई की बीमारी का इलाज तभी तो होगा, जब तुम अपने इस बीमार का इलाज करोगी। .... समझ गई ना ....।" .... बॉस हँसता हुआ कहे चले जा रहा था।

हाँ सर! समझ गई, बिल्कुल समझ गई। सुनीता अपने अन्दर की कड़वाहट को निगलते हुए बोली। और उसने तुरन्त त्याग पत्र लिख दिया। बॉस भौंचक्का सा उसे ताकता रह गया। सुनीता सोच रही थी कोई ओर राह निकल ही आएगी।

-P-II/I बैराज कालोनी, मायापुर हरिद्वार

गिद्ध कहाँ गए?

देवेन्द्र अस्थाना

समाचार पत्र पढ़ते हुए दस वर्षीय बालक ने पढ़ा। मोटे अक्षरों में चारों ओर से लाइनों के बीच में छपा हुआ था– "गिद्ध प्रजाति बड़ी तीव्रगति से विलुप्त होती जा रही है"। बाल मन को कौतूहल हुआ। उत्सुकता बढ़ी, आखिर ये सब गिद्ध कहाँ चले गए? क्यों चले गए? उसका ऐसा सोचना स्वाभाविक ही था। प्रतिक्रिया स्वरूप घोर आश्चर्य में डूबकर पास बैठे पितामाह से प्रश्न कर ही लिया,– "बाबा जी! आखिर ये सब गिद्ध क्यों चले गए? कहाँ चले गए? कैसे चले गए?"

पितामह ने अश्रुपूरित नेत्रों से पहले तो पास बैठी हुई बालक की दादी की तरफ देखा, फिर अपने पोते को सीने से चिपटाते हुए, अवरुद्ध कंठ से यों कहा,– "मेरे बच्चे! मेरे लाल!! मेरे ज़िगर के टुकड़े!!! जबसे मानव गिद्धों ने अपने माता–पिता की समस्त चल–अचल सम्पत्ति को उनके जीवित होते हुए ही, हड़पने–हथियाने के लालच में पागल होकर, उन असहाय कृसकाय, अति वृद्ध, दृष्टि व शारीरिक शक्ति से लाचार स्व–जन्मदाताओं को उपेक्षा, तिरस्कार कर मानसिक रूप से प्रताड़ित करना शुरु कर दिया, ताकि जल्द से जल्द जुल्म–असहनीय यातनाएं न झेल सकने के कारण, वह अपनी सारी चल–अचल सम्पत्ति बेटों बहुओं के नाम कर दें। तो– ऊँचे–ऊँचे घने वृक्षों की चोटियों पर रहने वाले असंख्य गिद्धों से यह सब कुकृत्य व अत्याचार न देखा गया। यह सब उनकी सहनशक्ति से जब बाहर हो गया। अपनी जाति और नाम पर यह धब्बा–कलंक लगता देखकर वह सब लज्जित हो उठे, शर्म से पानी–पानी हो गए। प्रतिरोध में अन्यत्र कहीं, सुदूर गुमनाम प्रदेश की ओर उड़ चले गए।"

लक्ष्मी भवन ६-माता वाला बाग कॉलोनी देहरादून-२४८००१ (उ०प्र०)

माँग

डा0 सेवा नन्दवाल

शादी की बात तय हो रही थी। वर के पिता दहेज के घोर विरोधी थे यह जानकर वधु के पिता बहुत आश्वस्त और चिंतामुक्त थे। सौजन्यतावश उन्होंने वर के पिता से पूछ लिया–"आपकी कोई मांग हो

तो बता दीजिए ताकि वक्त पर उसकी पूर्ति हो सके।''

वर के पिता ने सकुचाते हुए कहा–''हमने तो लड़की का हाथ मांगा है, हमें और क्या चाहिए?''

वधु के पिता गद्‌गद् हो ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने लगे कि इतने अच्छे संबंधी मिलें। वर के पिता ने अतिरिक्त शिष्टाचार प्रदर्शित कर पूछ लिया–''हां। आपकी कोई मांग हो तो बता दीजिए बुरा मत मानिए...हम पूरा करने की कोशिश करेंगे।''

वधु के पिता आत्मविभोर हो गए–''हमारी क्या मांग होगी हम तो वैसे ही लड़की वाले हैं. मांग तो लड़के वाले की होती है........हम तो पूर्ति वाले हैं''

''फिर भी एक अच्छे पिता के नाते आप क्या चाहेंगे?'' – वर के पिता ने आग्रह किया.

''आप पूछते हैं तो मैं अपनी बेटी की खुशी आपसे मांगता हूँ..... मतलब उसे कभी दुख ने मिले, हंसी खुशी से वह रहे...........सुख–प्रसन्नता से उसका दामन सदा भरा रहे.''

''सचमुच आप एक आदर्श पिता हैं लेकिन एक बात बताइए आपकी बेटी की ये अनुभूतियाँ किस तरह प्राप्त हो सकती हैं? ''–वर के पिता ने मुस्कराते हुए पूछा.

वधु के पिता सोच में पड़ गए फिर धीमे स्वर में बोले– ''बस उसे अच्छा खाने को मिले, अच्छा पहनने को मिले, अच्छा रहने को मिले, खूब घूमने फिरने को मिले....घर का कामकाज ज्यादा न करना पड़े.

''याने रोटी, कपड़ा और मकान, नौकर और गाड़ी''– निष्कर्ष निकालते हुए वर के पिता बोले.

''जी हां, बस यही आपसे मांगता हूँ''

''आदरणीय समधीजी हमें कुछ नहीं चाहिए......बस आप अपनी बेटी के लिए ये सारी सुविधाएं जुटा दीजिए'' –वर के पिता ने अतिशय विनम्र स्वर में कहा। वधु के पिता के चेहरे का रंग उड़ गया।

द्वारा-श्रीमती नंदवाल केन्द्रीय विद्यालय
आई.एस.पी. नेहरू नगरनासिक रोड, ४२२१०१

'करनी का फल'

दिनेश शर्मा

घर का सभी सामान आपस में बराबर – बराबर बांटने के बाद आखिर मां–बाप का बंटवारा भी तो जरूरी हो गया था, सो दोनों बेटों ने तय किया कि बाप बड़े के साथ और माँ छोटे के साथ रहेगी। बूढ़े रामदास ने दोनों बेटों को बहुतेरा समझाया–'बेटा ऐसा अनर्थ मत करो, मैंने तुम्हें कामयाब देखने के लिए क्या कुछ नहीं किया? तुम दोनों ही मेरी दोनों आँख हो, मैं और तुम्हारी माँ ज़िन्दगी भर हर सुख–दुख में साथ रहे हैं अब इस चला–चली की उम्र में हमें यूँ अलग न करो, हम दोनों अलग–अलग जी नहीं सकेंगे पर दोनों बेटे टस से मस न हुए, दोनों ही अपने फैसले पर अडिग्।

माँ ने रोते–रोते कहा–'अच्छा बेटा मेरी मानो तो यूँ कर लो कि हम दोनों बारी–बारी छः–छः महीने तुम दोनों के साथ रह लिया करेंगे। माँ की बात पर बड़ा बेटा हरी तो चुप रहा पर छोटे किशन का दिल न पसीजा। उसने कहा– अब इन फालतू बातों से क्या फायदा? आज से हम दोनों का कोई सम्बंध नहीं, जो जिसके हिस्से में है वह उसी के पास रहेगा बस। लाचार माँ–बाप ने दिल पर पत्थर रख लिया। रामदास ने तो उसी दिन से खाट पकड़ ली, तीन महीने में ही चल बसे।

माँ अक्सर ही छोटे बहू–बेटे की काना–फूसी सुनती–'देखो, हरी कितना तेज़ निकला? बूढे बीमार बाप को अपने हिस्से लेकर अपना पिंड तो छुड़ा लिया और ये हत्या हमारे गले मंढ दी, पता नहीं भगवान कब पीछा छुड़ाएगा।'' माँ सुनती तो मन ही मन कहती–'हे भगवान! ''मुझे भी उठा क्यों नहीं लेता।'' पता नहीं भगवान ने किसकी सुनी? कि पति के लगभग एक साल बाद माँ भी भगवान को प्यारी हो गई।

आज पच्चीस साल बाद किशन अक्समात हार्ट–अटैक से पत्नी के मरने पर बिलख–बिलख कर रो रहा था, कह रहा था–''मैं उसके बगैर कैसे जी पाऊंगा? भगवान मुझे भी उसके साथ ही क्यों नहीं उठा लिया?'' तभी उसकी नजर सामने दीवार पर लगी मां–बाप की तस्वीर पर पड़ी और वह अन्दर तक कांप उठा, ''ये मेरी ही तो करनी का फल है।''

एस-१२०, शिवालिक नगर बी०एच०ई०एल० हरिद्वार-२४६४०३

तलाश एक उत्तर की

के0एल0 दिवान

गुरू जी पुरानी विचारधारा के हैं। इसलिये जब मदन उनके पास आया और बोला, "गुरू जी ! बड़ी परेशानी में फँस गया हूँ। अभी कुछ समय तक चारों बच्चों की फीस नहीं दे पाऊँगा।" उनका नाम मत काटाना। कुछ समय बाद सब फीस जमा करवा दूँगा। तो गुरू जी इन्कार न कर पाये। समय बीतता गया। दो साल का लम्बा समय बीत गया। एक दिन गुरु जी को पैसे की बहुत जरूरत थी। इसलिये मदन को बुलाया और फीस जमा करने को कहा तब उसका उत्तर था, "आज कौन किसके बच्चों को दो वर्ष तक बिना फीस लिए पढ़ाता है। आप लोग तो एक माह बाद नाम काट देते हैं। आपको कुछ भूल लग रही है।"

गुरू जी चुप रह गए। बहस करने में कोई लाभ नजर नहीं आया। बस इतना बोले, "आप से एक निवेदन है, अपने बच्चों को इसी वक्त यहाँ से ले जाए। डरता हूँ आपके लिए मेरे मन से कोई बुरी आह न निकल जाए। इस समय तो मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि, "वह तुम्हारी इस बेईमानी के लिए क्षमा करे।" मदन अपने बच्चों को लेकर चला गया। इस घटना को बीते तीन माह ही हुए थे कि एक दिन मामूली से पेट दर्द के बाद मदन इस दुनिया से चला गया। यह दुखद समाचार सुन गुरु जी परेशान हो उठे। वह समझ नहीं पाते इस क्षणभंगुर शरीर जीवन मे आदमी इस तरह निडर होकर इतना बड़ा झूठ कैसे बोल लेता है। खुद को छल लेने का साहस कैसे कर लेता है। वह सोचते रहते है पर उत्तर नहीं मिलता।

१५८ नया हरिद्वार कालोनी, हरिद्वार

दर्द

रतन चन्द 'रत्नेश'

अभी–अभी इंटरव्यू देकर वह एक दफ्तर से निकला था। इंटरव्यू तो अच्छा हुआ था पर................?

इसके पूर्व भी उसके कई इंटरव्यू अच्छे हुए थे पर नौकरी अभी तक हासिल नहीं कर पाया था।

थका-थका सा वह बस-स्टैंड की ओर बढ़ रहा था। भूख भी ज़ोरों की लग आयी थी। सोचा, घर शीघ्र पहुँचकर वह भोजन कर लेगा। माँ भी घर पर प्रतीक्षा कर रही होगी। लोगों के कपड़े सी-सी कर थक जाती है बेचारी।

जेब में दस रूपए थे छुट्टे सिक्कों की शक्ल में। छः रुपए बस का किराया ही लग जाना था। पैदल चले तो बहुत देर से पहुँचेगा। भूखी माँ हारकर फिर से काम में जुट जाएगी।

उसका पेट भूख से बिलबिलाने लगा था। दो केले ही खा लूँ, सोचकर वह एक केले वाले की ओर बढ़ा। तभी एक छोटा सा लड़का "साहब, पालिश करा लो," कहता हुआ उसके सामने आ खड़ा हुआ। क्षण भर के लिए उसे लगा, वह सचमुच साहब हो गया है। एक नौकरी पेशा साहब।

उसने अपने पुराने पड़े जूतों की ओर निगाह डाली और उपेक्षा से कहा–"नहीं कराना भई पालिश।"

"करा लो न बाबू जी।" वह बड़ी दीनता से गिड़गिड़ाने लगा। उसे लगा जैसे उसके अंदर से कोई कह रहा हो–"हमारे घर की दशा अच्छी नहीं है साहब। मुझे नौकरी पर रख लीजिए न।"

उसकी आँखें नम हो आयीं। उसने दो रुपए उस पालिश वाले लड़के के हाथ पर रखे और एक जाती हुई बस की ओर दौड़ पड़ा।

म०नं०-१८५६, सैक्टर ७-सी चंडीगढ़-१६००१६

औपचारिकता

सैली बलजीत

शहर के बीचों बीच बहने वाले बरसाती नाले में एक लावारिस लाश का दिखना लोगों के लिए चर्चा का नया विषय हो गया था। लगभग जो भी वहां से गुजरा, अपने स्कूटर, रिक्शा, साइकिल को रोके बिना आगे नहीं गया, हर आदमी नाले के पुल पर खड़े हो, नीचे कीचड़ में लिथड़ी लाश को झांक कर देखते हुए गुजरने लगा।

पुलिस वाले साथ ही पड़ते चौराहे पर "ड्यूटी" पर तैनात रहे, वे

लोग वहां तक आए भी, लेकिन उन्होंने इसे बहुत ही सामान्य ढंग से लिया। भीड़ में से एक जना पुलिस वालों से बोला, "आप लोग लाश को निकलवाएं ना? लाश की मिट्टी पलीद हो रही है..........?"

"क्यों, हमें क्या पड़ी है? बिना एफ.आर.आई. के इसे हम भी हाथ नहीं लगा सकते" पुलिस वाला बोला था।

"तो एफ.आई.आर. कौन लिखवाएगा?" "हमें क्या मालूम......तुम लिखवा दो ना.........तुमने भी तो लाश को देखा है?"

"ना......ना.....कौन पचड़े में पड़े? कोई तो लिखवा ही देगा....उसके वारिस भी तो होंगे......" वह आदमी वहां से इतना कहते हुए खिसक गया।

"जाओ भई काम करो जाकर अपना...कोई तमाशा है क्या? कभी लाश नहीं देखी? जाओ भाई"........पुलिसिया डण्डा लहराने लगा था हवा में

लोग खुसर–फुसर करते हुए छितराने लगे थे

दूसरे दिन तक लाश वहीं पड़ी रही, कीचड़ में लिथड़ी हुई, औंधे मुंह। कोई वारिस नहीं आया था उसका। किसी के कानों तक जूं नहीं रेंगी थी।

भीड़ में से कोई बोला था, "हद हो गई, दो दिन हो गए हैं लाश को यहां पड़े हुए। अब तो सड़ाध भी आने लगी है। पुलिस वालों की ड्यूटी नहीं इसे बाहर निकलवाने की?"

"वो तो इन्तजार में हैं कि कोई एफ०आई.आर. लिखवाए और वे कार्यवाही करें........कौन गंद में हाथ डाले?" किसी ने पुलिस पर कटाक्ष किया था, जो कुछ ही दूर चाय के खोखे में चाय पी रहे थे।

उसे ऐसे लगा जैसे नाले में पड़ी लाश, चीख–चीखकर एफ.आर. आई. की औपचारिकता के लिए गुहार कर रही है ताकि उसकी मिट्टी तो ठिकाने लगे..............लेकिन लगता है शहर नें गूंगे बहरे और अंधे लोग आ बसे है............।

-म०नं०-१०, पावर हाऊस, दांगू रोड, पठानकोट

अपेंडिक्स

कुमार परवेज़

"............माई.......ई..........ई ! नहीं सहन होता यह दर्द। बाप-रे-बाप! मर जाऊँगा मैं, माई....ई.....ई........"

"........बेटे, धीरज रखो। कल ऑपरेशन होते ही सब कुछ ठीक हो जाएगा।" डबडबाई आँखें रोहित की माँ की। ....सांत्वना का स्वर....

"पाँच हजार रूपये ? कहाँ से आयेंगे इतने रुपये ? कल तक इंतजाम न हुए तो".....और आगे सोचने की क्षमता नहीं रह गई था उनमें।

".......माई....ई.....ई.......! चाकू.......चाकू कहाँ है? लाओ काटकर अलग कर देता हूँ इस अपेंडिक्स को। सब.......कुछ ठीक हो जाएगा।" 'बेटे.....ए...ए...' एक लंबी चीत्कार के साथ बेटे पर झुक आयी थीं रोहित की माँ। कैसा मज़ाक है यह भगवान हम गरीबों के साथ....? क्यों की तुमने गरीबों की पैदाईश"?

तभी, रामदास बाहर से आए और बिना कुछ किसी को कहे खटिया में धँसते गए।

'क्या हुआ जी?'

रामदास की आँखों में विवशता साफ झलक रही थी। पॉकेट से दवाई की कोई पुड़िया निकाली और कहा,"रोहित को दे दो।"

'पैसे का इंतजाम हुआ?'

"नही।" बड़े बुझे स्वर में उन्होंने कहा। इतना कहते लगभग वे रो पड़े।

रोहित की माँ को जैसे काठ मार गया। "अब, कल क्या होगा? सही तो कहना है सेठ का न घर न बार, न एक घूर जमीन। आखिर किस आधार पर देता इतने रूपये उधार। हम जैसे फालतू आदमी को।"

रोहित का दर्द कुछ कम हो चला था और वह कुछ सोचने की मुद्रा में आ गया था। सच में, गरीब इस समाज का फालतू अंग ही तो है, इस अपेंडिक्स की तरह। दर्द और अन्य अंगों को गलाने के सिवा कोई काम नहीं। समझ सकता हूँ उनका दर्द....।

रोहित ने अंतिम इच्छा चाही थी, "काश ! समाज का यह अपेंडिक्स कटकर उससे अलग हो जाता।"

C/O राजदेव शर्मा, रोड नं० ४, चित्रगुप्त नगर, पटना-२०

कर्मों का फल

जगदीश शर्मा 'शेषी'

"किसका फोन था?" पत्नी ने पूछा।

'उसी ठेकेदार का। बार–बार मना करने पर भी जिद पकड़े बैठा है, पचास हज़ार में काम कर दूँ। पर मैं पचहत्तर से कम में नहीं मानने वाला।" इंजीनियर पति ने उत्तर दिया।

"हाँ कह दे न यार! मेरी नई ज्वैलरी आ जाएगी। किसी और के पास चला गया तो न जाने मुझे कब तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

"अरे भई! रिस्क को भी तो देखना पड़ता है। कहीं कुछ गड़बड़ हो गई तो आधे तो देने ही पड़ेंगे।"

"कुछ नहीं होगा। दुनिया कमा रही है।"

इंजीनियर साहब ने पचास स्वीकार कर लिए। एक पुल की मरम्मत होनी थी। कुछ भाग सड़क का बनना था। काम तो कुछ हुआ नहीं। थोड़ी–सी लीपा–पोती के बाद बिल पास हो गए। इंजीनियर साहब की पत्नी की नई ज्वैलरी आ गई। उसने पड़ोसिनों पर रोब झाड़ा। सम्बन्धियों को चमक–दमक दिखाई। अपनी बहन के घर जाते समय अपनी गाड़ी में जब पति के साथ उस पुल से निकली तो पति ने कहा– "धन्यवाद करो इस पुल का अपनी नई ज्वैलरी के लिए।" यह सुनकर पत्नी तुनक कर मुस्कराई थी। बहन के धर पहुँच उसने बहन को अपनी ज्वैलरी दिखाई, प्रशंसा सुनी और गद–गद हो उठी।

वापस लौटते समय फिर पुल आया। पति –पत्नी दोनों मुस्करा उठे। पुल का एक बार फिर धन्यवाद करने ही वाले थे कि अचानक ही सामने से तेज रफ्तार वाला ट्रक आ गया। बचाओ करते समय गाड़ी रेलिंग से टकराई और उसे उखाड़ती हुई नदी में जा गिरी। कुछ जांबाज़ तैराक युवकों ने उनको बचा लिया। अस्पताल पहुँचाया। होश आने पर नयी ज्वैलरी को नदारद पा पत्नी पुनः बेहोश हो गई। पन्द्रह दिन अस्पताल में रहना पड़ा। घर आई। पड़ोसिने, सम्बन्धी मिलने आए। सबने कहा– "किसी अच्छे कर्म का फल सामने आया है कि मौत के मुँह से बचकर आ गए" और तब पति–पत्नी दोनों ही मन में सोचते 'हमारे कर्मों का ही फल था कि हम मौत के मुँह में जा गिरे थे।'

ए-२७, शास्त्री नगर, ज्वालापुर

सच

महावीर रवांल्टा

विपिन बोला – "राजू देखो! मुश्ताक बहुत लगनशील लड़का है जिस बात की ठान लेता है करके छोड़ता है।"

"यार तुम तो सदा उसकी बुराई करते थे आज कैसे अच्छाई करने लगे ?" उसकी बात सुनकर राजू ने पूछा।

"इंसान के भीतर से सच्चाई कभी–कभार ही फूटती है तब चाहे गुण हो या अवगुण'' उसकी बात पर विपिन का उत्तर था।

प्रत्युत्तर

एक औरत दूसरी को बता रही थी – "घर में बहू से कुछ कहती हूँ तो वह बात सुनाती हुई बीच मे मेरी बेटियों को घसीट लेती है और मैं हूँ कि कुछ बोल नहीं पाती।"

"जीजी, ये तो तुम गलत कह रही हो कि तुमने कुछ नहीं कहा, आजकल कोई अपने मौके पर कहाँ चुकता है, सास हो या बहू"

उसकी बात सुनकर पहली औरत का मुँह खुला का खुला रह गया।

प्रा० स्वा० केन्द्र - धरपा बुलन्दशहर (उ०प्र०) - २०३१३१

पागल आदमी

रामजोशी

गर्मियों का वह दिन ! तौबा ! तौबा ! सोचते ही रूह तक कांप उठती है। तपती, आग उगलती दोपहर, लू से चेहरा झुलसा जाता था। सांस उखड़ जाती थी। आंखे जलने लगती थीं। सड़कों पर तो कर्फ्यू सा लगा था। कौन निकलना चाहता है ऐसी गर्मी और धूप में बाहर पर अपनी अपनी मजबूरी है। मैं तिराहे पर खड़ा बस की इन्तजार कर रहा था। दूर–दूर तक कोई बस नज़र नहीं आ रही थी। सड़क के दूसरी ओर निगाह गई। एक सूखा सा पेड़ था। उसके नीचे एक मोची बैठा था। उसको इस प्रकार लू में झुलसता देखकर मेरे मन में उसके प्रति दया जाग उठी। सोचा उससे जूतों पर पालिश करवा लेता हूँ। तब मैं

उसके पास पहुँचा था। शरीर पर नाम मात्र मांस। हड्डियाँ ही हड्डियाँ। आंखें दो गढो के बीच धंसी हुई। निर्जीव सा शरीर। मैंने अपनी आवाज़ में संसार भर की विनम्रता भर कर कहा था – "बाबा ! जरा जूतों पर पालिश कर देना।" वह धीमी सी आवाज़ में बुदबुदाया था – "पालिश नही है।" "अच्छा ! ब्रुश ही दे दो।" "ब्रुश भी नहीं है।"

मुझे लगा था वह कोई सनकी था। ब्रुश नहीं, पालिश नहीं, शरीर में इतनी ताकत नहीं कि जूते में एक टांका भी लगा सके तब भी झुलसा देने वाली लू में बैठा था। मैं मन ही मन बुदबुदाया 'पागल कहीं का।' शायद उसने मेरे मन के भाव पढ़ लिए थे। तभी तो उसने अपनी लकड़ी की पेटी से एक जोड़ी जूता निकाला और दिखाते हुए बोला –"कोई साहब इस जोड़ी को चार दिन पहले मरम्मत के लिए दे गये थे और कह गए थे एक घंटे में लेने आजाऊंगा पर आए नहीं। तीन दिन से धूप और लू में बैठा–बैठा उनकी इन्तज़ार करता रहता हूँ। भगवान भली करे चिन्ता लगी है। बीमार न पड़ गया हो। कोई दुर्घटना न हो गई हो। बड़ा भला आदमी लगता था। दयावान दूसरों के दुख–दर्द का समझने वाला। ठीक आपकी तरह। नहीं तो कौन आता है मुझ जेसे बीमार भूखे–प्यासे हड्डियों के ढांचे के पास जूते मरम्मत कराने या पालिश कराने। भगवान सलामत रखे आपको भी और उनको भी –"

उसकी आवाज भीग आई थी। सनकी और पागल दिखने वाला वह व्यक्ति अचानक ही मेरी निगाहों में बहुत ऊचा उठ गया था। और मैं अपने आप को उसके सामने बोना पा रहा था।

- ८६३ नई शिवपुरी, हापुड़

चश्में का पानी

महाराज कृष्ण भरत

एक दशक पूर्व की बात है। कश्मीर में आतंकवाद चरम पर था। वहां से एक विशेष समुदाय के लोगों का पलायन हो रहा था। जम्मू में कई स्थानों पर तम्बुओं में उन्हें बसाया जा रहा था। इस बीच एक दिन एक तम्बु पर तो कहर ही बरपा। पांच वर्षीय वितस्ता जून मास के ताप से तप रही थी। वह अपने भीतर को ठण्डा करने के लिए चश्मे के पानी

की जिद कर बैठी और वह भी कश्मीर के चश्मे की। उसे फ्रिज का ठंडा पानी दिया गया फ्रीजर में जमी बर्फ दी गई, पर वितस्ता अपनी जिद पर अडिग रही। बच्चा कहां अपनी जिद त्यागता है।

कहां से लाते उसके लिए माता–पिता कश्मीर के चश्मे का पानी, या फिर इस शरणार्थी बस्ती के अन्य लोग। पर अनहोनी को कौन टाल सकता था। इस गम में वितस्ता बीमार हो गई, उसे ज्वर हो गया। पर रुग्णावस्था में भी वह चिल्ला उठती थी – "मां ! ...... मुझे चश्में का पानी दो ! ...... मुझे चश्मे का ही पानी पीना है।" .... और फिर रो पड़ती थी।

सबके सब बेबस थे। कुछ दिन बाद तो वितस्ता चश्में के पानी के लिए इतनी आतुर हो उठी थी कि सभी उसकी अवस्था देख चिन्तित हो उठे। "वितस्ता 'चश्मा..... 'पा.....नी' 'च......२ ....म......।" कहती हुई अपने प्राण गवां बैठी।

विस्थापित कैम्प नगरोट-२८४ जम्मू - १८१२२१

फ़ार्मूला 2000

नवीन कुमार 'आज़म'

"व्हाट ए नॉन सेन्स। ... उस मैजिस्ट्रेट की इतनी हिम्मत कि हमारी मइयां को जेल भेजे।" मन्सूर उत्तेजित हो रहा था।

"उसकी कोई लड़की–बड़की नहीं है–क्या ?" शिवम् ने पूछा फिर स्वयं ही उत्तर देते हुऐ बोला, "जरूर होगी –"

"येस यू आर राईट उठा लाऐगें, साली को।" मन्सूर ने तेवर बदलते हुए कहा, "ओए, काहनू इकट्ठा हो रहा है ठण्ड में" मन्सूरा गुरुदेव ने मन्सूर के कन्धे पे हाथ रखते हुऐ पूछा" गल्ल की है–तुसीं ऐ लाल पी.ले किस पे हो रहे ओ ?"

"देख–ज़रा पढ़ के देख आग जाएगी तुझे भी। मेरे तो तन मन में आग लग रही है। हमारी मइया को जेल हो रही है–।" शिवम् ने कहा गुरुदेव ने उस पर ध्यान नहीं दिया–अखबार की सुर्खी पढ़ कर बोला, "तुम भी अजीब बेवकुफ हो यारो--"

मन्सूर और शिवम् ने प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा गुरुदेव को "मेरी गल्ल सुनो, मैं बताता हूँ तुम्हें तरकीब जो मण्डल कमण्डल में अजमाई थी अपोज़िशन वालों ने। मैं उसे फार्मुला दो हजार कहता हूँ।"

गुरुदेव ने मन्सूर और शिवम् के कानो से मुंह जोड़कर दाढ़ी पर हाथ फेरते कुछ कहा। जिसे सुन कर मन्सूर–शिवम् के चेहरे खिल उठे।

"व्हाट–ब्रीलयन्ट आइडिया–मानना पड़ेगा शिवम् कि गुरुदेव तो गुरुदेव ही हैं।" मन्सूर चिहुँक उठा।

वे बार से बाहर निकल कर वैन में सवार हो गये। वैन स्टार्ट होने ही थी कि एक भिखारिन शीशे में हाथ वढ़ा गिड़गिड़ाने लगी "दो रूपया दे दे बाबू–बच्चा भूखा है– दो रूपया दे दे।"

काली कलूटी २०–२२ की उम्र की भिखारिन बच्चो की तरफ इशारा करती तो कभी हाथ अपने होठों की तरफ ले जाती।

"ओ मन्सूरा! देखता क्या है, फार्मुला २००० का माका है।" गुरुदेव बोला, 'फैंक गाड़ी में–चल लाल हवेली, अपना काम हो गया।'

तीनों ने भिखारिन को उठाकर गाड़ी में पटका। भिखारिन का बच्चा छिटक कर दूर जा गिरा। भिखारिन चिल्लाने लगी। "छोड़ो मुझे–छोड़ो मुझे – मेरे बच्चे – हाय मेरे बच्चे।" शोर सुनकर कर तमाशबीन लोग इकटठे हो गये किन्तु उसकी मदद को कोई नहीं बढ़ा।

वैन लाल हवेली की तरफ मोड़ दी गई।

अगली सुबह शिवम्, मन्सूर, गुरुदेव पुराने अडडे पर खड़े एक दूसरे से हाथ मार कर ठहाके मार रहे थे। गुरुदेव का फार्मुला २००० कामयाब हो गया–देख हेडलाइन।" "मइया के समर्थक सड़कों पर उतरे–एक युवती द्वारा आग लगा कर खुदकुशी–समूचे प्रदेश में बन्द व चक्का जाम का आह्वान।"

वह

-रामकृष्ण शर्मा

विचार–सैलाब उमड़ा ! विचारों का बन्दीगृह और वह। उसने पढ़ा था– "परिवर्तन होता है। नियम बदलते हैं। संसार बदलता है। लेकिन ऐसा परिवर्तन शायद सोचा न था। विष में अमृत का भ्रम पाले लोग पी, पिला रहे हैं। एक दूसरे को लूट–लूट खुशी मना रहे हैं। सवार्थ परता और अराजकता राष्ट्र–प्रगति के पाँव खींच रहे हैं। राष्ट्र–प्रतिष्ठा मूक है। उफ! संसार–गुरु कहलाने वाला मेरा भारत आज क्रूर दुर्दैव के हाथों में।"

"क्रूरता–खूँटी दया, सहानुभूति के हार निगल रही है। सफ़ेद पोशों की अन्ध कामनाओं का हाहाकार निर्धनता की भयावह चित्कार, भगवे पोश की अर्थ–लिप्सा और राजनीतिक महत्वाकांक्षा .... क्या–क्या देखना है अभी इस देश को ....। पतन सीमा लाँघ गया। अब केवल वह ही बचा सकता है। किसी का वश नहीं।"

"क्या करूँ? अकेला चना भाड़ फोड़े? अन्याय को मिटाने में जानबूझकर मिटना भी आत्महत्या है। शहीदों की शहादत, भक्तों की इबादत पर ही देश टिका है। इबादत, प्रार्थना, साधना, प्रभु–स्मरण अपने लिए, अपनों के लिए केवल मनुष्य ही कर सकता है। वह कण–कण में है। जगत उसका खेल है। पथ, पथिक, पथ–प्रदर्शक वह ही है। उसे पुकारना होगा, वही नैया है, वह ही खिवैया।"

हरिद्वार शिवमय हो रहा है। कांवड़िए रंग बिरंगी कांवड़ लिए शिव–शिवा के मंगल गीत गाते, भीनी–भीनी श्रावण–फुहार में भीगते गन्तव्य को बढ़ रहे हैं। वह भी भी आया। उसने कांवड़ ले ली है। वह हर–हर है। वह हरेक में है। हर–हर बम–बम महादेव। वह गाता, नम आँखों सहित कहता चल रहा है–

"बाबा डमरू का सुखद नाद सुना दे।
मेरे भारत की प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण बना दे।"

-प्रवक्ता, डा० हरिराम आर्य इन्टर कालेज मायापुर हरिद्वार

एक परिचय

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच 'साकेत साहित्य परिषद' ग्राम सुरभी, राजनांद गांव (म०प्र०)

मध्य प्रदेश राज्य के राजनांद गाँव की अपनी साहित्यिक पहचान है। इस नगरी को "संस्कार धानी" नाम से जाना जाता है। राजनांद गाँव से पूर्व की ओर तेरह किलो मीटर की दूरी पर ग्राम सुरभी है। यहाँ की आबादी लगभग दो हजार है। अंचल के ग्रामीण साहित्यिक प्रतिमाओं को प्रोत्साहित करने, गाँवों में साहित्यिक अभिरूचि विकसित करने, रूढ़ियों, अंधविश्वासों, छुआछूत जैसी सामाजिक रोगों से लड़ने, ग्रामीण जनों में स्वास्थ्य व स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने एवं देश भक्ति की भावना विकसित करने के उद्देश्य से गाँव में दिनांक २१–३–१६६६ को "साकेत साहित्य परिषद" की स्थापना की गई है।

विगत २६ मार्च २००० को ग्राम सुरगी में शास. उच्च. माध्य. शाला के प्रांगण में परिषद ने अपना स्थापना दिवस समारोह मनाया। इस अवसर पर अंचल के युवा साहित्यकार श्री संदीप साहू 'प्रणय' एवं लोक कलाकार जसगीत गायक श्री मनाजीत महियारा का सम्मान किया गया। समारोह में डा. एन. वर्मा प्राध्यापक शा० दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव, शत्रुघन सिंह राजपूत व अन्य साहितयकारो ने शिरकत की।

समारोह के दूसरे सत्र में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया।

परिषद माह में एक बार साहित्यिक परिचर्चा, समीक्षा व काव्य गोष्ठी आयोजित करता है। कारगिल युद्ध के समय परिषद के कवियों ने गाँवों में अपनी कविताओं के द्वारा राष्ट्र प्रेम जगाने का प्रयास किया।

'साकेत साहित्य परिषद' की कार्यकारिणी के पदाधिकारी हैं :–
अध्यक्ष :– श्री धमेन्द्र जैन 'मीत'
सचिव :– श्री ओमप्रकाश साहू
कोषाध्यक्ष :– श्री दिलीप कुमार साहु
संरक्षक :– श्री कुबेर सिंह साहू
एवं परामर्शदाता :– श्री गोपालसिंह कलिहारी सदस्य संख्या है ३५

कुबेर सिंह साहू

'दीपशिखा' की काव्य गोष्ठी

हरिद्वारः– २० जून दीपशिखा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मन्च ज्ञानोदय अकादमी हरिद्वार द्वारा एक सरस काव्य गोष्ठी का आयोजन 'दीपशिखा' के संस्थापक अध्यक्ष के० एल० दिवान के निवास स्थान पर किया गया। देर रात तक चली काव्य गोष्ठी में नगर सहित बाहर से पधारे कवियों ने अपने काव्य का पाठ किया। काव्य गोष्ठी में कई कवियों ने बदले सामाजिक परिदृष्य व लोगों की कुंठित मनोवृत्ति पर तंज कसे। जय प्रकाश 'यात्री' की सरस्वती वन्दना से प्रारम्भ हुई काव्य गोष्ठी में सब से पहले हरिद्वार की साहित्यिक गतिविधियों से जुड़े युवा कवि **जयधारी शर्मा** के काव्य संग्रह **'तुलसी दल'** का परिचय देते हुए के० एल० दिवान ने कहा कि **जयधारी शर्मा** की कविताएं कवि हृदय की सहज अभिव्यक्तियाँ हैं। उनकी चिन्ताएं सामांन्य आदमी की चिन्ताओं से जुड़ी है। तभी तो वे कहते है–

आज आदमी का आदमी पर विश्वास नहीं है
क्योंकि आदमी से आदमी निकल गया है

भारत की बढ़ती आबादी पर **शिवचरण टंडन सरल** ने अपनी चिन्ता कुछ यूँ व्यक्त की–

हो गए हम एक अरब, खुशी मनाएं या ग़म

आज संसार में अपने पराये की पहचान करना बड़ा कठिन हो गया है। आदमी अपनों से ही छला जा रहा है। आदमी की इस पीड़ा की अभिव्यक्ति **सुभाष मलिक** कुछ इस प्रकार करते हैं–

गर्दिशों की ठोकरों ने कितना यह जीवन तपाया
पर न अब तक जान पाए कौन अपना या पराया

सच पूछो तो आदमी के जीवन से उसके सपने और अरमान कहीं खो गए हैं। मनुष्य विरोधी साज़िशों के अंधकार में वह भटक गया हैं। बहुत कुछ कहना चाहता है पर खामोश खड़ा है। इस पीड़ा की ओर ध्यान खींचा देहरादून से पधारे शायर **ओम प्रकाश खरबंदा 'अम्बर'** ने

वजूद अपना तो है बस एक बूढ़े पेड़ की मानिन्द
कि सब कुछ देख कर भी हम जुबाँ से कुछ नहीं कहते

प्रेम की विभिन्न मनः स्थितियों एवं स्नेह सिक्त क्षणों में कुछ पल ऐसे भी आते हैं जब आदमी बिलकुल मौन हो जाता है। शायद कुछ ऐसे पलों की बात कहते है **डा० नरेश मोहन** –

''मूक प्रणय' की मौन साधना, कहती मधु अमृत पिला दो''

कहते है जब हिचकी आती है तो बहुत ही अपना, कहीं दूर बैठा याद कर रहा होता है। तभी तो **साधुराम पल्लव** ने कहा

''हिचकियों के तार से जब आप का सन्देश पाया
भावना ने स्वप्न वन से कुछ नई कलियाँ चुनी''

मनुष्य का मन प्यार का भूखा है। वह अपने–पराये सभी से प्यार पाने की चाह हमेशा से अपने एहसासों से जोड़े रहा है तभी तो **महेश भट्ट** कहते हैं–

जिन्दगी में कुछ न कुछ तो प्यार चाहिए।

प्रेम के जादुई प्रभाव में एक ओर जहां मनुष्य को हर तरफ रंग, फूल और खुशबू–खुशबू ही महसूस होती है वहीं प्रिय जनों से बिछुड़ने पर हर समय मन पर एक उदासी और बेचैनी छाई रहती है और मन से बार–बार प्रश्न जाग उठता है क्या उसे कभी मेरी याद आती होगी? इसी बेचैनी, उदासी और प्रश्न की झलक लिए प्रस्तुत हैं **के० एल० दिवान** के दो हाइकु आप के सामने–

मन में बसी/ पीड़ा, कसक, टीस/ प्रेम सौगात।

मन उदास/ सच, दिल केवल/ तेरे ही पास।

अपना और अपनी रचनाओं का परिचय देते हुए कवि **माल चन्द** ने कहा–

कोई शायर नहीं मैं यार/ जिन्दगी जीने का अन्दाज है ये
वक्त गुज़र जाता है तन्हाई का/ दुनिया का गहरा राज़ है ये

सबके सुख की कामना करते हुए **जगीश शर्मा शैषी** ने फरमाया

भक्ति करन, माँ के चरण। मन में लगन लागी।
मैं मांगू तेरे दर से माँ। सब हो जायें बड़भागी।।

अपने बहुत करीब का जब कोई बेहद परेशान करता है तो उसकी दी पीड़ा भी मन को प्यारी लगती है तभी तो **शहिद हसन 'शाहिद'** ने कहा–

तेरा गम खा के शादमाँ हूँ बहुत/ इस से बढ़कर नहीं खुशी कोई

सम्बोधन में बड़ी शक्ति है। सम्बोधन हमारे मन को गंगा जल के समान पाक–साफ़ बना देता और जब हम कभी किसी को सम्बोधन नहीं दे पाते तो मन उलझनों में फंसा रहता है। तभी तो **बृजेन्द्र हर्ष** ने कहा –

तेल बिना ज्यों दीपक में निर्जीव पड़ी रहती है बाती।
मैं निर्जीव बिना सम्बोधन बोलो कैसे लिखूं पाती

सामाजिक गिरावट और आदमी के वहशीपन से परेशान **राकेश शर्मा 'राकेश'** ने कहा–

घर लौटती/ एक अबोध चिड़िया पर/ कुछ बाजों का/सामूहिक रूप से झपटना/ केवल एक घटना ही नहीं/ कुछ और भी है।

आदमी संसार में रह कर अच्छे कार्यों द्वारा भी भगवान को पा सकता है। तभी तो **श्रीमती संतोश रंगन** ने कहा—

कौन कहता है दुनिया को छोड़ वीराने में देख
उसका जलवा हैं सब अपने बेगाने में देख

दिन प्रतिदिन हैवानियत को बढ़ते एवं आदमीयत को खत्म होते देख परेशान हो उठे **चाचा अलीगढ़ी** ने फरमाया—

बचा ले आदमी को, आदमीयत खत्म हो जायेगी
जुनूने-हैवानियत, सच ऐसा बीज बो जाएगी,

कभी—कभी अपने ही बीच में किसी एक को अभिमान से भरा देखकर मन बड़ा दुखी हो उठता है। शायद किसी ऐसे ही क्षण को याद करते हुए **मदन सिंह यादव** ने कहा—

वह बुद्धिमान, इसका उसे ज्ञान है
शायद इसी लिए अभिमान है

नेह, सम्मान और परम्परा के टूटने की पीड़ा से दुखी **राम कुमार भामा** ने कहा—

भारत में सम्पन्न जनों ने परम्परा को मोड़ दिया
नेह और सम्मान सुजनता के बन्धन को तोड़ दिया

विश्वासों के टूटने से आम आदमी परेशान है और **जय प्रकाश 'यात्री'** कहते हैं—

किस अंगना विश्वास उड़ेलूं, अब किसको हो भाव समर्पण
ऊँचाई को छूने वाले सबके सब ही निकले बोने

आदमी सब कुछ नाप सकता है, पर आदमी के हृदय की गहराई को नहीं नापा जा सकता तभी इस गोष्ठी के अध्यक्ष **कुंवर पाल सिंह** ने कहा—

सागर नापे- पर्वत नापे-नापे बड़ी-बड़ी हम खाई
कोई पता बता दे उसका जो नापे मन की गहराई

देर रात तक कविता के विभिन्न रसों में डूबी काव्य गोष्ठी का संचालन दिनेश शर्मा 'दिनेश' ने किया। करनाल से पधारे मयंक भंडारी, देहरादून से अमित दुआ एवं मीनु दुआ, दिल्ली से आये रविन्दर लाल एवं कामनी लाल एवं मिलाप दिवान भी काव्य गोष्ठी से जुड़े रहे।

-के० एल० दिवान

आपका पत्र मिला

मान्यवर

ज्योति (अंक-६) कविता विशेषांक के विषय में आप की अमूल्य प्रतिक्रिया प्राप्त हुई। आपका धन्यवाद। आशा है भविष्य में भी आपका स्नेह बना रहेगा। श्री कुबेर सिंह– ग्राम सुरभि, ओम प्रकाश शर्मा– ग्वालियर, वन्दना– राग बिटूल, डा० अनिल शर्मा 'प्रीत'– रामपुर मनिहारान, डा० आर० धवन– चण्डीगढ़, रतन चंद 'रत्नेश'– चण्डीगढ़, डा० राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर'– फिरोजाबाद, श्रीमती सन्तोष रंगन– हरिद्वार, डा० सुशीला– नागपुर, दिलीप सिंह– प्राणगढ़ी, नीलाक्षी– हाजीपुर, गजेन्द्र दत्त गौड़– धौलना, मदन सिंह यादव– हरिद्वार, आर० एन० तिवारी– सहारनपुर, डा० सत्यव्रत शर्मा– ज्वालापुर, देवेन्द्र अष्ठाना– देहरादुन, महावीर रवांल्टा– धरपा, श्रीमती नीता नय्यर– हरिद्वार, एडवोकेट करीम खाँ 'सॉज'– बड़ौदा, विजय कुमार अग्रवाल– बदायूं, हरि राजस्थानी– नई दिल्ली, राजेन्द्र उपाध्याय– दिल्ली, नवीन कुमार 'आज़म'– लुधियाना, साधुराम दर्शक– दिल्ली, अंग्रेज़ सिंह 'दिलबर'– एवं सुखविंदर कौर– मंडी डबवाली, त्रिवेदी राम शंकर चंचल– झाबुआ, रेनु सैनी– नई दिल्ली, रोहताश फलसवाल– दिल्ली, परमाणु कुमार– गया, महाराज कृष्णा भरत– जम्मू , राजेश गोयल– औरंगाबाद, चांद शर्मा– बटाला, डा० सेवानन्दवाल– नन्दवाल एवं ....।

शुभकामनाओं सहित।

-के० एल० दिवान

PREPARATORY SCHOOL

380, Govind Puri, Hardwar

A forward March of Gayanodai Academy with an experience of 27 year in the field of Education.

A Play way school For your

KIDS

If Your Child is of

Age Group Between 2 And 5 years

Admissions Open

Here Your Child Will Learn

- Polite talk
- Self-Efforts to Change one's Dress
- Self Cleanliness Manners
- Table Manners

HERE WE HAVE FOR YOUR CHILDREN

- Educational Toys
- Swings
- Artificial Pool
- A Fairy Dream Room
- Celebration of Impotant Festivals
- Celebration of Student's Birthday
- Bimonthly Medical checkup of your Child by City's well known Paediatrician

For more details and prospectus contact :-

Principal

Little Angles' Preparatory School

Contact between 8 A.M. and 1.30 P.M.

Printed at Kiran Offset Printing Press Kankhal Hardwar Ph. 415975